इमाम अली (अलै.)

चले हैं जानिबे मस्जिद अली हरेक रोता है
गरेबाने सहर भी मोमिनों अब चाक होता है

सितारा सुबह का है छेड़ता दिल के फफोलों को
हरेक झोंका नसीमे सर्द का नशतर चुभोता है

इमाम अव्वलीं की आखरी शब है इबादत है
चराग़े जिन्दगी कुछ देर में खामोश होता है

लिपटती है उधर मुरग़ाबिया कदमों से हज़रत के
इधर हर हल्कए ज़न्जीरे दर में शोर होता है

बता ऐ मसजिदे कूफा तहे मेहराब पिछले से
छुपाये तेग़े सम आलूद यह कौन आज सोता है

अली इब्ने अबि तालिब का ग़म वह ग़म है आलम है
के जो सुनता है वह रो-रो के अपनी जान खोता है

शबे बिस्ते यकुम रमज़ान सन चालीस हिज़री से
फलक भी रोज़ पर्दे में शफ़ख़ के खून रोता है

बुला लो जल्द आका 'फिक्र' को भी अपने रौज़े पर
के अब ज़िक्रे नजफ से वह बहुत बेताब होता है